प्रेमचंद के साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ एवं उनके निदान के संदर्भ में प्रेमचंद की अवधारणा

मधुबाला
पीएच.डी. शोधार्थी हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

अनुराग सिंह
पीएचडी शोधार्थी हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश
प्रेमचंद ने अपने साहित्य में नारी पर होने वाले अत्याचार, अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों को उजागर करते हुए मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। वे शोषित और वंचित वर्गों, विशेषकर स्त्रियों के समर्थक थे और उन्होंने नारी को सामाजिक चेतना एवं राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का प्रयास किया। उनकी रचनाओं में नारी पात्र संघर्षशील, जागरूक और अधिकारों के लिए लड़ने वाली दिखाई देती हैं। वे केवल व्यक्तिगत समस्याओं का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं, बल्कि पूरे समाज की स्त्रियों की स्थिति को दर्शाती हैं। प्रेमचंद ने उस समय के समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता, नैतिकता के दोहरे मानदंड और स्त्री की दासता को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। पुरुषों को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त थी, जबकि स्त्रियों पर कठोर सामाजिक नियंत्रण और आरोप लगाए जाते थे। उन्होंने दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, विधवा की दयनीय स्थिति, कन्या जन्म के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण और वेश्यावृत्ति जैसी समस्याओं को गंभीर सामाजिक मुद्दों के रूप में प्रस्तुत किया। इन समस्याओं के कारण नारी जीवन अत्यंत कष्टमय और अभिशप्त बन गया था।
प्रेमचंद ने यह भी दिखाया कि इन समस्याओं के मूल में आर्थिक असमानता और सामाजिक रूढ़ियाँ हैं। उन्होंने इन कुरीतियों के विरोध और नारी-पुरुष समानता की आवश्यकता पर बल दिया। प्रेमचंद का मानना है कि समाज का समग्र विकास तभी संभव है जब स्त्री और पुरुष दोनों समान अधिकारों और सहयोग के साथ आगे बढ़ें।

बीज शब्द
नारी समस्या, सामाजिक अन्याय, प्रेमचंद साहित्य, नारी शोषण, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, विधवा समस्या, लैंगिक असमानता, सामाजिक चेतना, नारी मुक्ति, राष्ट्रीय आंदोलन

मूल आलेख

नारी जीवन से जुड़ी समस्याएँ तथा उसके निदान का प्रश्न प्रेमचंद के लगभग समस्त साहित्य में उठाया गया है। उनके साहित्य में नारी पर हो रहे अत्याचार अंधविश्वास को लेकर मानवीय मूल्यों के समर्थन के साथ – साथ नयी जागरूकता, नयी सामाजिक चेतना का स्वर स्पष्ट रूप से सुना जा सकता है। प्रेमचंद शोषित और वंचित वर्गों के पक्षधर थे।

प्रेमचंद से पूर्व भी सामाजिक सुधारकों ने नारी मुक्ति को अपने आन्दोलन का विषय बनाया। फलतः प्रेमचंद पर इस बात का प्रभाव था कि उन्हें इस आसपास के परिवेश से सर्वाधिक प्रेरणा मिली और उन्होंने नारी को देश की वास्तविक कर्मभूमि पर उतारने का निश्चय किया तथा इस आन्दोलन को राष्टीय मुक्ति आन्दोलन से जोड़ने का प्रयास किया। प्रेमचंद के साहित्य में नारियों ने अपने – अपने योग्यता के अनुरूप कर्मक्षेत्र में भाग लेते हुए अन्याय तथा अत्याचार का विरोध करते हुए स्वतंत्रता संग्राम में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर त्याग एवं बलिदान का उच्च आदर्श स्थापित किया। प्रेमचंद की नारी पात्र सक्रिय एवं संघर्षशील तो थी ही साथ ही उनके जीवन की जो भी समस्याएँ थी, वह उनकी समस्याएँ न होकर तत्कालीन समाज की सभी नारियों की समस्याएँ थी। प्रेमचंद का साहित्य नारी की सभी समस्याओं को उसके संघर्षों को अभिव्यक्त करते हुए उसके समाधान को भी प्रस्तुत करता है। ये नारियाँ अन्याय का प्रतिकार करते हुए, स्वयं के अधिकारों के लिए लड़ना जानती है।

नारी और पुरूष एक – दूसरे के पूरक होने के साथ – साथ समाज के अभिन्न अंग भी है। समाजिक व्यवस्था का संपूर्ण संतुलन उनके पारस्परिक संबंधों पर निर्भर करता है। दोनो का सहयोग ही समाज की दिशा और दशा तय करती है। किन्तु युगीन भारतीय समाज में नारी और पुरूषों के संबंधो में आए तनाव एवं संघर्ष, सामाजिक समस्याओं को उत्पन्न करने वाले परम्परागत जीवन मूल्यों को जिम्मेदार माना जा सकता है। नैतिक आदर्शों के नाम पर भारतीय नारी को जो यातनाएँ झेलनी पडी, वह उसके सामाजिक अवरोध की बेड़ियाँ बन गई। ऐसी बेड़ियों में जकड़ी नारी को कोई अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रह गया था। प्रेमचंद युगीन समाज में नैतिकता का दोहरा मापदंड चल रहा था। जिन चीजो के लिए पुरूषो को स्वतंत्रता दी गई थी, उसकी आलोचना नहीं होती थी, उन्ही चीजों के लिए नारी को पतिता एवं कुलटा कहा जाता था।

नारी पुरूष की सामाजिक स्थिति में भारी अंतर था, जिसके परिणामस्वरूप नारी के जीवन की समस्याओं को प्रेमचंद ने सामाजिक दृष्टि से परखा और अपने साहित्य का विषय बनाया। उनके सामने नारी जीवन की समस्याएँ इस प्रकार विद्यमान थी कि प्रेमचंद के प्रारंभिक उपन्यासों प्रेमा, वरदान, सेवासदन आदि का केन्द्र बिन्दु ही नारी और उसके जीवन से जुड़ी समस्याएँ थी। प्रेमचंद के उपन्यासों तथा कहानियों में तत्कालीन सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण उभर कर आया है। उनके साहित्य में नारी जीवन की समस्याए ज्वलंत रूप से विद्यामान थी। इन समस्याओं को विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में देखा जा सकता है।

नारी का जन्म हमारे हिंदू समाज में कन्या या देवी के रूप में होता है। किन्तु दुःख की बात है कि उसकी इस पवित्रता को जीवन की जटिलताओं तथा कष्टो में बदल दिया गया है। प्रेमचंद युगीन नारी की अधिकांश समस्याएँ वैवाहिक जीवन से संबद्ध थी, लेकिन विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि समस्याओ के बीज उन परिस्थितियों से जुड़ी है जो विवाह से पूर्व का जीवन व्यतीत करता है। समाज का पुरूष वर्ग अपनी पत्नी से इसलिए नाराज़ रहता है, क्योंकि वह बेटी को जन्म देती है। 'नैराश्य' कहानी की निरूपमा ऐसी ही अभागिन स्त्री है। यद्यपि वह संपन्न कुल की वधू है किन्तु कन्या जन्म के कारण वह पति द्वारा उपेक्षित रहती है । कहानी कुछ इस प्रकार है –

"आज आदमी अपनी स्त्री से इसलिए नाराज रहते हैं, कि उसके लड़कियाँ क्यों होती है, लड़के क्यों नही होते ? कई – कई दिनो तक घर ही में नहीं आते। आते भी तो कुछ इस तरह खिचे – तने रहते कि निरूपमा थर – थर काँपती रहती थी।"[1]

कन्या का जन्म कोई पाप नहीं है, किन्तु कुछ समाज के रूढ़िवादी सोच ने उसे तिरस्कृत कर दिया है। जिसका उत्तरदायित्व हमारे समाज पर ही है। पत्नी पति के एक मृदु मुस्कान के लिए ललकती एवं तड़पती रहती है और इसी वेदना के साथ उसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है। आज प्रत्येक माता – पिता को चाहिए कि अपनी पुत्री को अत्मनिर्भर बनाए, तभी उसका जीवन सफल हो सकता है और समाज का कल्याण भी संभव है। इतना ही नहीं वह समाज के विकास में सहयोग देकर हमें गौरवान्वित कर सकती है।

प्रेमचंद पुरूष होकर भी नारी – मन की गहराइयों को जितनी अच्छी तरह समझते थे, शायद उस युग में अन्य लेखक या लेखिका न समझ सके। मुंशी जी आरंभ से ही नारी की दयनीय दशा को लेकर चिंतित थे। प्रेमचंद इस बात पर लिखते हैं –

"एक नजर इस गरीब औरत जात पर भी तो डालिए। क्या मिट्टी पलीत की है, बेचारियों की। कहने को तो कह दिया – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। जहाँ नारियो की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। लेकिन कोई पूछे तो आपने किस तरह का अधिकार नारियों को दिया है ? उसकी सच्ची स्थिति दासी के अलावा कुछ नहीं है।"[2]

प्रेमचंद ने नारी पर हो रहे अत्याचारों की तस्वीर अपने वक्तव्य में प्रस्तुत की है। उन्होंने समाज के सम्मुख इन समस्याओं को चुनौतिपूर्ण रखा है। उन्होंने समाज के बनावटी मुखौटे को उखाड़ते हुए लिखा है – "समाज यह सब अपनी आँखों के समाने होते, देखता है, लेकिन तो भी उसके कानो पर जूँ नहीं रेंगती, अपनी जिम्मेदारियों की तरफ से कितना बेखबर, लेकिन बेबसों को सताने के लिए कितना शेर।"[3]

प्रेमचंद ने अपने साहित्य में नारियों के शोषण की तपिश को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। दहेज जैसे विकराल दानव अनगिनत कन्याओं को मौत की नींद सुला दिया। लड़कियाँ जब बड़ी होने लगती है, तो उनके बड़े होने का आभास उनके माता – पिता को इतना नहीं होता, जितना समाज तथा पड़ोसियों को होता है। ये सारी बाते प्रेमचंद के समय में ही नहीं, आज भी समाज में अपने मूल रूप में विद्यमान है।

नारी जीवन अनेक सामाजिक कुप्रथाओं की श्रृंखला से जकड़ा हुआ है। दहेज के अलावा अनमेल विवाह भी इसी तरह की समस्या होते हैं। प्रेमचंद ने सेवासदन, निर्मला उपन्यासों में दहेज के अभाव में पात्रों के गले मढ़ दी जाने वाली नारी का वर्णन किया है। 'निर्मला' में प्रेमचंद ने इसका यथार्थ रूप में वर्णन कुछ इस प्रकार से किया है कि निर्मला के लिए वर खोजने को मोटेशम शास्त्री को बहुत दौड़ना पड़ता है, क्योंकि निर्मला की माँ कल्याणी के पास दहेज देने के लिए पर्याप्त धन नहीं था। विवाह निश्चित करते समय धन को प्रमुखता दी जाती थी। कन्या के गुणों को नहीं। प्रेमचंद इस पर व्यंग्य करते हुए, लिखते है कि – "वह निर्मला रूपवती है, गुणशील है, चतुर है, कुलीन है तो हुआ करे। दहेज हो तो सारे गुण दोष गुण हैं। गुणों का कोई मूल्य नहीं केवल दहेज का मूल्य है।"[4]

सेवासदन की सुभान का गदाधर प्रसाद से तथा निर्मला का मुंशी तोताराम से दहेज की कुप्रथा के कारण अनमेल विवाह कर दिया गया है। प्रेमचंद ने ऐसे विवाह के दुष्परिणामों पर अपने उपन्यासों, कहानियों में प्रकाश डाला है और यह स्पष्ट किया है कि प्रौढ़ व्यक्ति से विवाह होने पर दाम्पत्य जीवन में क्षोभ, असंतोष की भावना उत्पन्न होती है। 'गवन' के वकील इंदुभूषण ने संतान लालसा में वृद्धावस्था में रतन से विवाह किया इंदुभूषण को संतान तो नहीं हुआ, लेकिन विवाह से कुछ वर्ष बाद ही वह रतन को छोड़कर स्वर्ग सिधार गया। उनके अंतिम समय में रतन ने जालपा को जो पत्र लिखा, इससे उसके मनः स्थिति का परिचय मिलता है, वह लिखता है –

"पूर्व जन्म का संस्कार केवल मन को समझाने की चीज है, जिस दण्ड हेतु ही हमें न मालूम हो उस दण्ड का मूल्य ही क्या।..... इस अंधेरे, निर्जन, कांटो से भरे हुए जीवन – मार्ग में मुझे केवल एक टिमटिमाता हुआ दीपक मिला था। मैं उसे आँचन में छिपाए, विधि को धन्यवाद देती हुई, गाती चली जाती थी। पर वह जीपक भी मुझ से छीना जा रहा है। इस अंधकार में मैं कहाँ जाऊँगी, कौन मेरा रोना सुनेगा, कौन मेरी बांह पकडेगा ?"[5]

वैवाहिक समस्याओं को दूर करते के लिए यह आवश्यक है कि दहेज के विरूद्ध जनमत तैयार करके इस कुप्रथा का उन्मूलन किया जाये। इस संबंध में नवयुवकों का यह कर्तव्य है कि वे अपने अभिभावकों की लोभी प्रवृत्ति का विरोध करे। आज वैवाहिक समस्याओं के कारण नारी जीवन कितना अभिशाप ग्रस्त हो गया है, इसका वर्णन प्रेमचंद के साहित्य में वर्णित नारी की समस्याओं से किया जा सकता है। इस संबंध में

प्रेमचंद कहते हैं – "मैं कहता हूँ अगर हमारा समाज अब भी नहीं समझता और स्त्रियों के साथ इंसाफ का वर्ताव नहीं करता तो बहुत मुमकिन है वह दिन जल्दी ही आने वाला है, जब हिंदुओं के घर की लड़कियाँ अत्याचारों से घबड़ा कर अपनी अच्छानुसार शादी कर लिया करेगी।"[6] उनका यह अनुमान वर्तमान परिस्थितियों में सत्य होने की भूमिका प्रस्तुत कर रहा है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में हिंदू समाज की घिसी पिटी रूढ़ियों का जमकर विरोध किया है। विधवा नारी का यथार्थ चित्रण उन्होंने अपने उपन्यास 'वरदान' में किया है। प्रेमचंद की पैनी नज़र इन अबलाओ की ओर भी रही है। इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार प्रेमचंद ने मध्यवर्गीय परिवार की नारी बृजरानी की विधवा स्थिति को यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया है। प्रेमचंद ने बृजरानी की सास द्वारा यह कथन प्रस्तुत करते हुए लिखा है – "यह अभागिनी जब से घर में आयी, घर का सत्यानाश हो गया। इसका पैर बहुत निकृष्ट है।"[7] प्रेमचंद ने विधवा की दयनीय स्थिति का बेहद ही मार्मिक चित्रण किया है वह लिखते हैं – "विधवा पर दोषारोपण करना कितना आसान है जनता को उसके विषय में नीची से नीची धारणा करते देर नहीं लगती, मानो कुवासना ही वैधव्य की स्वाभाविक वृत्ति है, मानो विधवा हो जाना मन की सारी दुर्वासनाओं सारी दुर्बलताओं का उमड़ आना है।"[8]

इस प्रकार प्रेमचंद ने नारी जीवन की अनेकों समस्याओं पर विचार करते हुए "वैश्या" समस्या को भी हृदयगम किया है। उन्होंने 'सेवासदन' के माध्यम से मध्यवर्गीय नारी के अभिशप्त जीवन की करूण गाथा कही है। उन्होंने नारी की विषय परिस्थितियों को उजागर किया है। 'सेवासदन' में वेश्या समस्या का विशद विवेचन करने के साथ प्रेमचंद ने इस समस्या का समाधान भी दिया।

प्रेमचंद युगीन समाज में नैतिकता का दोहरा मानदण्ड था। जिन कार्यों के लिए पुरूष की आलोचना नही होती, उन्हीं कार्यों के लिए स्त्री को कुलटा, पतिता समझा जाता था। स्त्री और पुरूष के इस समाजिक वैषम्य को प्रेमचंद ने अपनी गहन सामाजिक दृष्टि से परखा था। प्रेमचंद ने न केवल इस सामाजिक वैषम्य तथा दुष्परिणामों पर विचार किया वरन् उन मूल कारणों को भी प्रकाश में लाया जो इस समस्या के जन्मदाता है। स्त्री जीवन की विवशताओं में सर्वाधिक जड़ बनाने वाली अर्थ से संबंध रखती है। क्योंकि यह प्राणी की अनिवार्य आवश्यकताओं में से एक है। यह केवल पुरूषों के जीवन से ही संबंध नहीं रखता अपितु स्त्री भी इसकी उतनी ही अधिकारों रखती है। जितना चाहे पुरूष अपने अधिकारों का प्रयोग करे, समाज स्त्रियों का मूल्य गिरा नहीं सकता। केवल विविध सामाजिक बंधनों से उसकी शान्ति और बुद्धि को बांधकर उसे जड़ बनाया जा सकता है। जो केवल नारी के लिए नहीं संपूर्ण समाज के लिए यह घातक सिद्ध होता है। स्त्री और पुरूष को अगर समान रूप से प्रभावित करता है तो वह अर्थ का विभाजन है। यह सत्य है कि यह प्रश्न आज भी हमारे समक्ष ज्यों – का – त्यों बना हुआ है। जैसे – जैसे हम आधुनिकता की ओर आगे बढ़ रहे हैं। उलझने, समस्याएँ और अधिक हमारे सामने जटिल होती जा रही है। वर्तमान समय में व्यक्तियों के सामने जो जीवन नर्वाह की कठिनाइयाँ आ रही है, उनसे नारी के जीवन को भी जटिल बना दिया है। प्रेमचंद ने प्रखरता के साथ नारी के खिलाफ़, पुरूष प्रभुत्व को चुनौती दी है। उन्होंने समाज के सर्वांगीण विकास की वकालत की है। इस व्यवस्था में जीवन के हर क्षेत्र में पुरूष और नारी में समानता होगी और वे कंधे से कंधा मिलाकर समाज के विकास के पथ पर समग्रता के साथ अग्रसर कर पाएँगें।

संदर्भ

1. 'नैराश्य' मानसरोबर, भाग 3, पृ.सं. – 113
2. 'कलम का सिपाही' अमृतराय, पृ.सं – 44
3. वही पृ. सं. – 45
4. 'निर्मला', प्रेमचंद, सरस्वती प्रकाशन, बनारस, पृ. – 59
5. 'गबन' प्रेमचंद, हंस प्रकाशन , इलाहाबाद, पृ. – 193
6. 'प्रेमचंद घर में' शिवरानी देवी, पृ.-सं. – 97 , संस्करण – 1956
7. 'वरदान' प्रेमचंद, पृ.सं. – 109
8. 'प्रतिज्ञा' मुशी प्रेमचंद पृ.सं. –